National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 29-09-2025, Accepted: 29-10-2025, Published: 13-11-2025
Volume 10, Issue 4, 2025, Page No. 39-42

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

डॉ० देवेन्द्र सिंह[1], मनोज कुमार यादव[2]
[1] प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग, सतीश चन्द्र कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत
[2] शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा विभाग, सतीश चन्द्र कॉलेज, बलिया, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
वर्तमान शोध अध्ययन "माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन" माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं और उनकी शैक्षिक सफलता के मध्य संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास है। व्यक्तित्व वह समष्टिगत संगठन है जो व्यक्ति के व्यवहार, विचार, दृष्टिकोण और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि विभिन्न व्यक्तित्व लक्षण जैसे – बहिर्मुखता, अन्तर्मुखता, आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता, उत्तरदायित्व, मिलनसारिता तथा अनुभव के प्रति खुलापन आदि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं। इस शोध में माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक नमूना पद्धति से किया गया तथा डेटा संग्रह के लिए मानकीकृत व्यक्तित्व परीक्षण और शैक्षिक उपलब्धि के अभिलेखों का उपयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि व्यक्तित्व लक्षण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के महत्वपूर्ण पूर्वानुमानक हैं। विशेष रूप से उत्तरदायित्व, आत्म–अनुशासन, तथा भावनात्मक संतुलन रखने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि का स्तर उच्च पाया गया, जबकि अस्थिर या अंतर्मुखी प्रवृत्ति वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि तुलनात्मक रूप से निम्न रही। शोध से यह निष्कर्ष निकला कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर ध्यान केंद्रित कर उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार लाया जा सकता है। अतः यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षा नीति–निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, जिससे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु उपयुक्त शैक्षिक वातावरण का निर्माण किया जा सके।

मूल शब्दः माध्यमिक स्तर, व्यक्तित्व लक्षण, शैक्षिक उपलब्धि, मध्यमान, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात इत्यादि

प्रस्तावना
शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की आधारशिला है, जिसके माध्यम से न केवल बौद्धिक क्षमता का विकास होता है, बल्कि सामाजिक, भावनात्मक एवं नैतिक गुणों का भी संवर्धन होता है। माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का व्यक्तित्व निर्माण अपने निर्णायक चरण में होता है, क्योंकि इसी अवस्था में उनके व्यक्तित्व लक्षणों का विकास, आत्मबोध, रुचियाँ तथा शैक्षिक उपलब्धियाँ एक दूसरे से गहराई से जुड़ी होती हैं। व्यक्तित्व लक्षण जैसे–संवेदनशीलता, आत्मविश्वास, जिम्मेदारी, सहयोगशीलता, दृढ़ निश्चय, और आत्मनियंत्रण, विद्यार्थियों की अध्ययनशीलता, शैक्षिक दृष्टिकोण और उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। इसी प्रकार, शैक्षिक उपलब्धि केवल बुद्धि का परिणाम नहीं होती, बल्कि यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, पारिवारिक वातावरण, शिक्षण पद्धति तथा सामाजिक परिप्रेक्ष्य से भी प्रभावित होती है।
वर्तमान युग में शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षार्थियों में ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना भी है जो सामाजिक रूप से उत्तरदायी, आत्मविश्वासी और सृजनशील हों। अतः यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के बीच संबंध का गहन अध्ययन किया जाए, जिससे शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षाविदों को विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने में सहायता मिल सके। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों और उनकी शैक्षिक सफलता के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करने का प्रयास है, जिससे शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक सुधार और व्यक्तिगत शिक्षण रणनीतियों का विकास संभव हो सके।

आवश्यकता एवं महत्व
माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक है, क्योंकि यह शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्तित्व विकास तथा शैक्षिक नीति–निर्माण के क्षेत्र में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। माध्यमिक शिक्षा वह स्तर है जहाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्माण, आत्मबोध, सामाजिक समायोजन तथा नैतिक मूल्यों की नींव रखी जाती है। इस अवस्था में विद्यार्थियों की मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक परिपक्वता तीव्र गति से विकसित होती है। अतः उनके व्यक्तित्व लक्षणों–जैसे आत्मविश्वास, अनुशासन, जिम्मेदारी, समाजशीलता, भावनात्मक स्थिरता, तथा नेतृत्व क्षमता का अध्ययन यह समझने में सहायक होता है कि ये गुण उनकी शैक्षिक उपलब्धि को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
वर्तमान युग में शिक्षा केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है। इसलिए विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को केवल बौद्धिक स्तर पर आंकना पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह भी जानना आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व लक्षण उनके अध्ययन के दृष्टिकोण, सीखने की प्रेरणा और सफलता में कैसी भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार का अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों एवं शिक्षाविदों को यह दिशा देता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार किया जाए जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति अधिक प्रभावशाली हो सके।
इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने और समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों को साकार करने में सहायक है। इस शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर शैक्षणिक वातावरण, शिक्षण विधियाँ तथा परामर्श सेवाएँ इस प्रकार विकसित की जा सकती हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी के व्यक्तित्व अनुरूप हों। साथ ही यह अध्ययन शिक्षा में गुणवत्ता सुधार, छात्रों की आत्म–प्रेरणा में वृद्धि तथा भविष्य के व्यावसायिक जीवन में सफलता हेतु आवश्यक व्यक्तित्व गुणों के विकास में भी योगदान देता है।
इस प्रकार यह शोध न केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों के पीछे के मनोवैज्ञानिक कारकों को उजागर करता है, बल्कि यह शिक्षा के मानवीय पक्ष को भी मजबूत बनाता है। इसलिए

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन शिक्षा क्षेत्र में अनुसंधानात्मक, व्यावहारिक और नीतिगत तीनों ही दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है।

सम्बंधित साहित्य

सक्सेना, रानी प्रिया (2017) ने ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में उपलब्धि स्तर, समायोजन तथा नैतिकता पर व्यक्तित्व के कारकों के प्रभाव का अध्ययन'' नामक शीर्षक से पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिए विद्यार्थियों की उपलब्धि स्तर का अध्ययन करना, उनके समायोजन स्तर का अध्ययन करना तथा नैतिकता आदि पर उनके व्यक्तित्व के कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिए यादृच्छिकी विधि से छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के लिए चयनित किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि– माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर एवं व्यक्तित्व में सार्थक एवं प्रभावी सम्बन्ध है। इसके अतिरिक्त समायोजन स्तर एवं नैतिकता स्तर पर भी व्यक्तित्व के कारकों का सार्थक प्रभाव पाया गया। जबकि छात्राओं के उपलब्धि स्तर, समायोजन स्तर एवं नैतिकता स्तर छात्रों के उपलब्धि, समायोजन एवं नैतिकता स्तर से उच्च पाया गया।

माथुर, वी0 एस0 (2016) ने ''उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति, उपलब्धि तथा व्यक्तित्व में सह–सम्बन्ध का अध्ययन नामक शीर्षक पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के सामाजिक– आर्थिक स्तर का अध्ययन करना तथा उनके उपलब्धि स्तर तथा व्यक्तित्व से सह–सम्बन्धों का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा व्यक्तित्व में धनात्मक सह–सम्बन्ध है, इसी प्रकार छात्र–छात्राओं के उपलब्धि स्तर तथा व्यक्तित्व में भी सार्थक एवं धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

त्रिपाठी, रवीन्द्रनाथ (2010) ने ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरूचि, अभिवृत्ति तथा उपलब्धि स्तर पर व्यक्तित्व कारकों के प्रभाव का अध्ययन'' नामक शीर्षक पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिए निर्मित किये गये प्रमुख उद्देश्यों में विद्यार्थियों की अभिरूचि, अभिवृत्ति एवं उपलब्धि स्तर का अध्ययन करना तथा उनके अभिरूचि, अभिवृत्ति एवं उपलब्धि स्तर पर व्यक्तित्व कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिए कुल 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिकी विधि से किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिरूचि पर व्यक्तित्व कारकों का प्रभाव सार्थक है तथा इसी प्रकार विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर भी व्यक्तित्व कारकों का प्रभाव सार्थक पाया गया जबकि विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर पर व्यक्तित्व कारकों का प्रभाव नगण्य पाया गया तथा दोनों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध के उद्देश्य निम्नवत हैं –

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना अधोलिखित है –

1. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के जौनपुर तथा सुलतानपुर जनपद के समस्त माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है ।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सम्भाव्य विधि के अंतर्गत आने वाले सरल यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के जौनपुर तथा सुलतानपुर जनपद के क्रमशः 10–10 माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 600 विद्यार्थियों को इस प्रकार से चुना गया है– जौनपुर तथा सुलतानपुर जनपदों के प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 15 छात्र व 15 छात्राएं, इस प्रकार क्रमशः एक जनपद से कुल 150 छात्रों व 150 छात्राओं को लिया गया है अर्थात दोनों जनपदों को मिलकर 300 छात्र व 300 छात्राओं (कुल 600 विद्यार्थियों) को चुना गया है।

शोध उपकरण

1. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों को मापने के लिए प्रो० के० एस० मिश्र का पंच व्यक्तित्व गुण अनुसूची प्रयोग में लाया गया है।
2. शैक्षिक उपलब्द्धि– प्रस्तुत शोध में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा– 11 तथा कक्षा– 12 के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्द्धि को ज्ञात करने के लिए उनके विद्यालयी परीक्षा प्राप्तांकों को आधार बनाया गया है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है

परिकल्पना–1 माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1: माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	क्रांतिक मान	टिप्पणी(सार्थकता स्तर)	
						.01 स्तर	.05 स्तर
छात्र	300	151.41	10.28	598	5.07	सार्थक अंतर है।	सार्थक अंतर है।
छात्राएँ	300	147.14	10.34				

तालिका 1 में माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों का विवरण दिया गया है।प्रथम समूह माध्यमिक स्तर के छात्रों का है जिनका मध्यमान 151.41 तथा मानक विचलन 10.28 है जबकि दूसरा समूह माध्यमिक स्तर की छात्राओं का है जिनका मध्यमान 147.14 तथा मानक विचलन 10.34 है। दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया। गणना के उपरांत क्रांतिक मान 5.07 प्राप्त हुआ जो 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर के मान क्रमशः 1.96 तथा 2.58 से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि दोनों मध्यमानों में अंतर सार्थक है। अतःशोधकर्ता की शून्य परिकल्पना, माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

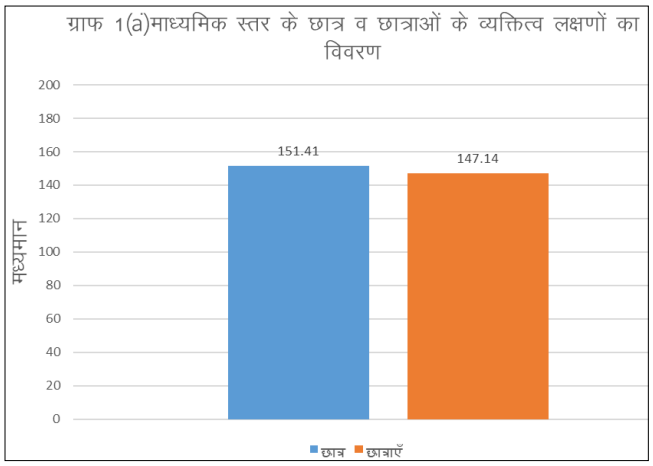

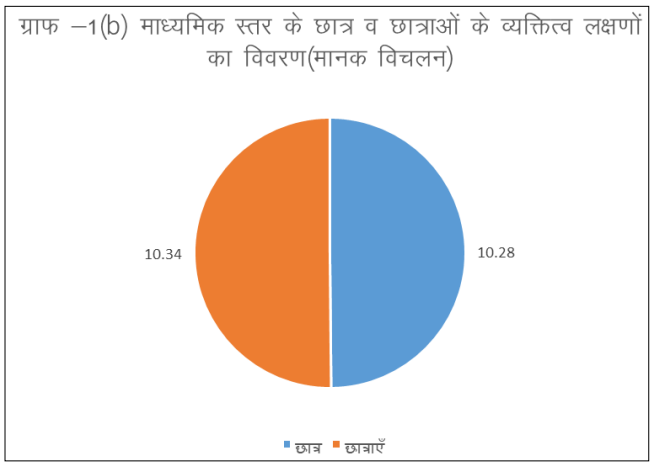

परिकल्पना –2 माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2: माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का विवरण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतन्त्रता मान	क्रांतिक मान	टिप्पणी (सार्थकता स्तर)	
						.01 स्तर	.05 स्तर
छात्र	300	351.75	38.90	598	2.59	सार्थक अंतर है।	सार्थक अंतर है।
छात्राएँ	300	359.62	37.64				

तालिका 2 में माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का विवरण दिया गया है ।प्रथम समूह माध्यमिक स्तर के छात्रों का है जिनका मध्यमान 351.75 तथा मानक विचलन 38. 90 है जबकि दूसरा समूह माध्यमिक स्तर की छात्राओं का है जिनका मध्यमान 359.62 तथा मानक विचलन 37.64 है। दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात परीक्षण का प्रयोग किया गया। गणना के उपरांत क्रांतिक मान 2. 59 प्राप्त हुआ जो 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर के मान क्रमशः 1. 96 तथा 2.58 से अधिक है । अतः कहा जा सकता है कि दोनों मध्यमानों में अंतर सार्थक है। अतः शोधकर्ता की शून्य परिकल्पना माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त की जाती है तथा प्राप्त परिणाम को स्वीकार किया जाता है।

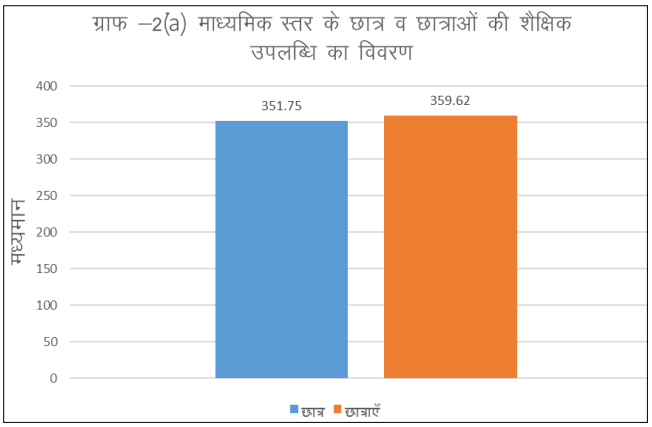

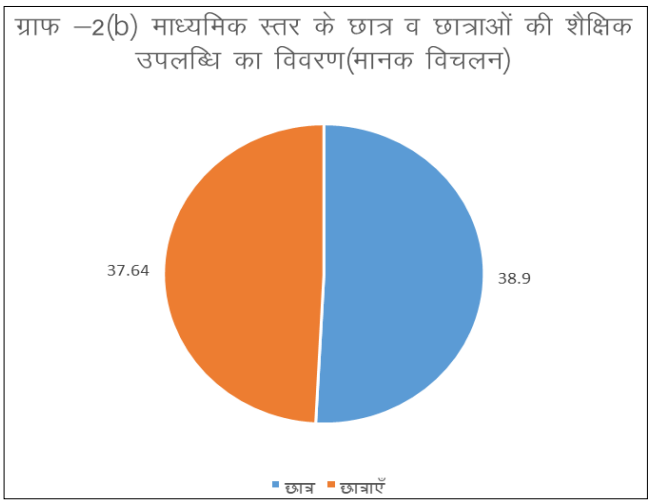

निष्कर्ष

वर्तमान अध्ययन के अंतर्गत प्रस्तुत परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों में सार्थक अंतर है" के परीक्षण से प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों में वास्तव में महत्वपूर्ण एवं सार्थक अंतर पाया गया। अध्ययन के परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि छात्राओं में भावनात्मक स्थिरता, उत्तरदायित्व, सहयोग भावना तथा अनुशासन जैसे गुणों की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जबकि छात्रों में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास, साहसिकता तथा नेतृत्व प्रवृत्ति अधिक देखने को मिली। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों लिंगों के व्यक्तित्व निर्माण में सामाजिक परिवेश, पारिवारिक वातावरण, सांस्कृतिक अपेक्षाएँ एवं शैक्षणिक अनुभव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अतः यह परिकल्पना कि "माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षणों में सार्थक अंतर है" अध्ययन के परिणामों के आधार पर स्वीकृत की गई है। यह निष्कर्ष इस तथ्य की पुष्टि करता है कि लिंग के आधार पर व्यक्तित्व विकास में विविधता स्वाभाविक एवं सामाजिक रूप से प्रभावित होती है।

अध्ययन के परिणामों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई

सार्थक अंतर नहीं पाया गया। प्राप्त आँकड़ों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि दोनों लिंगों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समान रूप से विकसित होती है तथा लिंग भेद का इस पर कोई उल्लेखनीय प्रभाव नहीं पड़ता। अतः प्रस्तुत परिकल्पना "माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है" अध्ययन के परिणामों के आलोक में असत्य सिद्ध होती है। इसका तात्पर्य यह है कि छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कुछ हद तक अंतर विद्यमान है, जो यह संकेत करता है कि उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक केवल जैविक या लिंग आधारित न होकर सामाजिक, शैक्षिक वातावरण, पारिवारिक सहयोग, अध्यापन पद्धति एवं आत्मप्रेरणा जैसे विविध तत्वों पर भी निर्भर करते हैं। इस प्रकार अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि लिंग के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में अंतर तो पाया गया, परंतु यह अंतर स्वाभाविक विविधताओं तथा परिस्थितिजन्य कारणों से उत्पन्न हुआ है, न कि किसी स्थायी या स्वभावगत कारक से।

शोध की उपयोगिता

माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन शैक्षिक क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों तथा शिक्षाविदों को यह समझने में सहायता प्रदान करता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम–जैसे आत्मविश्वास, अनुशासन, भावनात्मक संतुलन, समाजशीलता तथा जिम्मेदारी की भावना उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। इस शोध से प्राप्त निष्कर्ष माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली एवं विद्यार्थी–केन्द्रित बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। शिक्षकों को विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के अनुरूप शिक्षण विधियाँ अपनाने, प्रोत्साहन देने तथा समावेशी कक्षा वातावरण निर्मित करने की दिशा में मार्गदर्शन प्राप्त होगा। साथ ही, यह अध्ययन शिक्षा–नीति निर्माताओं के लिए भी उपयोगी है क्योंकि इससे माध्यमिक शिक्षा में व्यक्तित्व विकास आधारित पाठ्यचर्या निर्माण एवं मूल्यांकन प्रणाली के सुधार की दिशा में ठोस सुझाव मिल सकते हैं। इस शोध का उपयोग कर विद्यालयों में परामर्श सेवाओं को सशक्त बनाया जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों में आत्मविकास, प्रेरणा और सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हो। अतः यह अध्ययन विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए अत्यंत शैक्षिक रूप से उपयोगी सिद्ध होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, आर. ए. (2018): शैक्षिक मनोविज्ञान,आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. सिंह, एस. पी. (2019): व्यक्तित्व एवं व्यवहार का मनोविज्ञान,विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. गुप्ता, वी. के. (2020): शैक्षिक उपलब्धि और व्यक्तित्व विकास का तुलनात्मक अध्ययन, अजय पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. मिश्रा, आर. एन. (2017): विद्यालयी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक सफलता का अध्ययन, ज्ञानदीप प्रकाशन, वाराणसी।
5. त्रिपाठी, एम. एल. (2016): शैक्षिक मूल्यांकन एवं अनुसंधान विधियाँ,भावना पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, लखनऊ।
6. अग्रवाल, एस. (2021): किशोरावस्था के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षणों का अध्ययन,नेशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।
7. सिंह, आर. के. (2022): शैक्षिक मनोविज्ञान में व्यक्तित्व और उपलब्धि के परस्पर संबंध, आर्य बुक डिपो, जयपुर।
8. वर्मा, पी. (2015): शैक्षिक मनोविज्ञानः सिद्धांत और प्रयोग, हिंदी ग्रंथमाला, नई दिल्ली।
9. जोशी, डी. पी. (2018): व्यक्तित्व, बुद्धि एवं उपलब्धिः एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन, कल्याणी प्रकाशन, इलाहाबाद।
10. पटेल, एम. (2023): माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व लक्षण एवं शैक्षिक उपलब्धि का विश्लेषणात्मक अध्ययन, शिक्षा प्रकाशन, भोपाल।
11. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
12. सिंह, अरूण कुमार (2017):मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना ।